जुलाई-२०२१ ISSN : 2229-5585

नमन
NAMAN

यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी सूची में क्रमांक-२४ पर नामांकित
सान्दर्भिक शोध-पत्रिका

सम्पादक

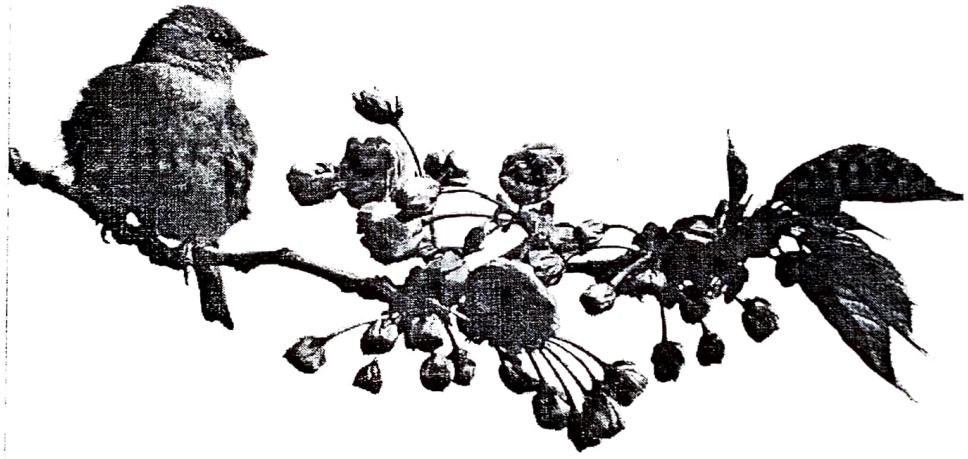

प्रो. श्रद्धा सिंह • डॉ. हिमांशु शेखर सिंह

अंक : २५
वर्ष : १४

वर्ष-१४ : अंक-२५
नमन Naman
जुलाई-२०२१

वर्ष-१४ : अंक-२५ ISSN : 2229-5585
यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी सूची में क्रमांक-२४ पर नामांकित सान्दर्भिक शोध-पत्रिका

नमन Naman

प्रधान संरक्षक
श्रीमती प्रेमलता सिंह (प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास)

संरक्षक
श्री सुधांशु शेखर सिंह (Secretary and CEO - Humanitarian Aid International)

परामर्श-मण्डल
प्रो. एम. विमला–हिन्दी विभाग, बंगलुरु विश्वविद्यालय, बंगलुरु, कर्नाटक
प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी–पूर्व अध्यक्ष- संस्कृत विभाग, म.गाँ.का.वि.पी., वाराणसी
डॉ. जितेन्द्रनाथ मिश्र–पूर्व अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज, वाराणसी
प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह–आचार्य-हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो. उमापति दीक्षित–अध्यक्ष- नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
प्रो. दिवाकर सिंह–पूर्व अध्यक्ष- समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर
डॉ. रामसुधार सिंह–पूर्व अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी
प्रो. भारती सिंह–प्राचार्य- महामाया राजकीय महाविद्यालय, महोना, लखनऊ
डॉ. सविता भारद्वाज–प्राचार्य- राजकीय महाविद्यालय, गाजीपुर
डॉ. आशा यादव–हिन्दी विभाग, बसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी
डॉ. आशुतोष कुमार तिवारी–प्राध्यापक, दुर्गापुर, पश्चिम बंगाल

न्यास-मण्डल
श्री शैलेन्द्र सिंह–पूर्व प्रबंधक, ग्रामीण बैंक, हरदोई
डॉ. भारती सिंह– एम.ए. (समाजशास्त्र– हिन्दी), पी-एच.डी.
डॉ. दिनेश कुमार सिंह–(अ.प्रा.)गणित विभाग, राजकीय महाविद्यालय, लखनऊ
डॉ. पद्मजा सिंह–प्राध्यापिका
श्रीमती आरती सिंह–प्राध्यापिका

सम्पादकीय सम्पर्क
सम्पादक– 'नमन'
प्रेम सदन– सी. ३३/१४७-३२ ए
आचार्य नरेन्द्रदेव नगर, चन्दुआ छित्तूपुर, वाराणसी
वार्ता-सेतु : ०९४१५९८४९८३, ०९४१५५३०५८७
shraddhahindi@gmail.com
E-mail : himanshusinghkvp@gmail.com
namanrj2008@gmail.com

शब्द-संयोजक
श्री विमल चन्द्र मिश्र–पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१०१०

मुद्रक
श्री मोहित निगम– प्रिंटेक, इण्डियन प्रेस कालोनी, मलदहिया, वाराणसी

आवरण- एल. उमाशंकर सिंह

नमनं वासुदेवाय नमनं ज्ञानराशये।
नमनं प्रीतिकीर्तिभ्यां नमनं सर्वभूतये।।

नमन

Naman

प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास द्वारा प्रकाशित
यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी (Multidisciplinary)
सूची में क्रमांक- २४ पर नामांकित सान्दर्भिक अर्द्धवार्षिक
शोध-पत्रिका
ISSN : 2229-5585

सम्पादक

डॉ. श्रद्धा सिंह
प्रोफेसर- हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

डॉ. हिमांशु शेखर सिंह
सह आचार्य- हिन्दी विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय
प्रयागराज

वर्ष-१४ : अंक-२५ ISSN : 2229-5585

नमन

Naman

मानविकी एवं साहित्य

यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी (Multidisciplinary) सूची में क्रमांक-२४ पर नामांकित सान्दर्भिक अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका

© प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास

सम्पादन

- अनियतकालीन, अवैतनिक तथा अव्यावसायिक
- रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार हैं। प्रकाशित शोध-पत्रों में आये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- रचनाओं पर कोई मानदेय / पारिश्रमिक देय नहीं होगा।
- लेखकों, सदस्यों एवं शुभचिन्तकों के आर्थिक सहयोग से पत्रिका प्रकाशित होती है।
- किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र वाराणसी होगा।

सदस्यता-शुल्क :

प्रति अंक व्यक्तिगत रु. २५०/-	संस्थागत ३००/–
व्यक्तिगत आजीवन रु. ३५००/-	संस्थागत ५०००/–
विदेश के लिए US$ २०	आजीवन US$ १५०

कृपया भुगतान सम्पादक के नाम से चेक/बैंक ड्रॉफ्ट/धनादेश द्वारा सम्पादकीय पते पर भेजें। वाराणसी से बाहर के चेक में रु. ५०/- अधिक जोड़ें।

कृपया अपनी सदस्यता / सहयोग की धनराशि इस पर भेजें–
प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास
खाता संख्या-४०१६०१००००५४८९
बैंक ऑफ बड़ौदा, महमूरगंज शाखा
वाराणसी-२२१०१०
RTGS/NEFT IFSC Code : BARB0MAHMOO

१३. भीष्म साहनी के उपन्यास : एक अवलोकन ६६
शशि
१४. राही मासूम रजा के कथा साहित्य में आँचलिकता ६९
जयसिंह यादव
१५. अमरकांत : एक सूक्ष्म दृष्टि ७४
विवेकानंद उपाध्याय
१६. शैलेश मटियानी के उपन्यासों में महिलाओं का समन्वयवादी एवं आदर्शवादी स्वरूप ७७
सुजीत कुमार
१७. मृणाल पाण्डे के नाटक : एक पुनर्पाठ ८३
डॉ. शबाना हबीब

काव्य-चिन्तन

१८. कविता का बदलता स्वरूप : छायावाद से स्वातन्त्र्योत्तर तक ८८
ममता गुप्ता
१९. भोजपुरी लोकगीतों में जीवन का यथार्थ ९३
अश्वनी कुमार सिंह
२०. 'निराला' के काव्य-विकास की रूप-रेखा ९७
अन्जू प्रभा यादव
२१. मुक्तिबोध की काव्य-संवेदना १०३
डॉ. अम्बिका उपाध्याय
२२. पवन करण की कविताओं में स्त्री-मन ११०
डॉ. प्रीति भट्ट

साहित्य और समाज

२३. साहित्य के परिप्रेक्ष्य में पितृसत्तात्मक समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति ११५
डॉ. सपना भूषण
२४. हिन्दी साहित्य में नारी-चिन्तन व नारी-अस्मिता ११८
डॉ. सुरेन्द्र पाण्डेय
२५. चेम्मीन : मछुआरे समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति १२५
डॉ. राकेश कुमार राम
२६. दलित का पारिवारिक जीवन १२९
सोनम शुक्ला
२७. नो, मीन्स नो १३३
तुल्या कुमारी
२८. निज भाषा उन्नति अहै : मातृभाषा के सन्दर्भ में १४०
डॉ. अनूप कुमार

सिनेमा और संगीत

२९. हिन्दी सिनेमा और आइटम साँग १४३
डॉ. नीतू परिहार

हिन्दी सिनेमा और आइटम साँग

डॉ. नीतू परिहार *

भारतीय सिनेमा मनोरंजन की दृष्टि से आज भी सस्ता और लोकप्रिय माध्यम है। बाजारवाद के बढ़ते दबाव ने फिल्मों को भी प्रभावित किया। फिल्मों को अपनी लागत वसूल करने के लिए नए-नए तरीके ढूँढ़ने पड़े। प्रचार और प्रगति के सभी हथकण्डे प्रयोग किये जाने लगे, ताकि दर्शक सिनेमाघर तक आएँ। लेकिन दर्शकों को एक बार अपनी तरफ आकर्षित करने का यह काम धीरे-धीरे इतना मुश्किल और चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है कि शीर्ष के स्थापित कलाकार भी अपना प्रभाव नहीं डाल पा रहे। यही कारण है कि विदेशों में शूटिंग, फोटोग्रॉफी में भिन्न-भिन्न प्रयोग, फिल्म का संगीत आदि के साथ 'आइटम' का भी प्रचलन बढ़ा। आइटम साँग के लिए स्थापित और शीर्ष अभिनेत्रियों को लाया गया, ताकि उनकी प्रसिद्धि को भुनाया जा सके। कुछ दिनों पहले 'काल' फिल्म आई, तो उसका टाइटल चलने के समय शाहरूख खान और मलाइका अरोड़ा अश्लील नृत्य करते नजर आए।[१] इसी तरह, जो अभिनेत्री सफलता के शिखर पर है, उससे आइटम साँग करवाकर फिल्म की पब्लिसिटी की जाती है, जिससे दर्शक फिल्म देखने सिनेमाघरों की ओर बढ़ें। चूँकि फिल्म एक व्यवसाय है और यह व्यवसाय सीधे दर्शकों पर निर्भर करता है, इसलिए फिल्म की घोषणा के समय से लेकर फिल्म की रिलीज तक दर्शकों को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है।[२]

आज के संचार-क्रान्ति के युग में हर घर में टी.वी. और सबके घरों में रेडियो आदि सहज उपलब्ध हैं। फिल्म रिलीज से ३-४ महीने पहले उसका संगीत बाजार में उतारा जाता है, ताकि फिल्म के आने से पहले फिल्म के गाने लोगों की जुबान पर चढ़ जाएँ। इन गानों में भी आइटम साँग इस तरह से टी.वी. के गानों वाले चैनलों पर दिखाया जाता है कि दर्शक उसे बार-बार देखने के लिए लालायित रहें। मनोरंजन और मुनाफा–सिनेमा का प्रमुख उद्देश्य होता है। हिन्दी सिनेमा या कहें भारत की मुख्यधारा के सिनेमा में कुछ एक अपवादों को छोड़ दें, तो करोड़ों के इतराते बजट में सबसे ज्यादा मिलता है अभिनेता, अभिनेत्री, संगीत निर्देशक, नृत्य निर्देशक, मारपीट के दृश्यों के निर्देशक, 'आइटम साँग' आदि को।[३] आपको याद होगा, फिल्म 'फिजाँ' में फिल्म के दूसरे गाने इतने लोकप्रिय नहीं हुए थे, जितना सुष्मिता सेन पर फिल्माया गया गाना 'मुझे मस्त माहौल में जीने दे' लोकप्रिय हुआ था। उस समय 'सुष्मिता' सफलता की ऊँचाइयों पर थीं। उसका लचीला बदन, सुडोल कद-काठी सभी के आकर्षण का केन्द्र थी। यही वजह थी, फिल्म के उस गाने को, प्रचार के लिए उपयोग किया गया। आज सुष्मिता का बाजार-मूल्य नहीं है, इसलिए वे किसी आइटम के लिए याद नहीं की जातीं। सिनेमा में सफलता के शिखर पर बैठने वाली अभिनेत्रियाँ जल्दी-जल्दी बदलती हैं। इसी बदलाव पर निर्देशकों-प्रोड्यूसरों की नजर रहती है। वे फिल्मों में अभिनेत्रियों का चुनाव उसी तरह करते हैं। ऐश्वर्या राय पर 'कजरारे-कजरारे तेरे काले-काले नैना' भी उसी वक्त फिल्माया गया, जब ऐश्वर्या का बाजार-मूल्य काफी था। समय की नब्ज को समझते हुए ऐश्वर्या ने अमिताभ और अभिषेक के साथ आइटम साँग किया। फिल्म 'बंटी और बबली' के चलने में इस गाने की अहम भूमिका थी। एक और कारण जो मुझे लगता है, वो यह कि शीर्षस्थ अभिनेत्रियाँ 'आइटम' करने के लिए इसलिए भी तैयार हो जाती होंगी कि उन्हें समयाभाव में दर्शकों से जुड़े रहने तथा थोड़े समय की मोटी कीमत मिल जाती है। वरना

* सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष– हिन्दी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

पुराने भारतीय सिनेमा पर नजर डालें, तो ऐसा प्रचलन वहाँ नहीं दिखाई देता। उस जमाने में हास्य कलाकारों को तवज्जो दी जाती थी। केस्टो मुखर्जी, महमूद, जगदीप आदि कलाकार फिल्म में इसलिए लिये जाते थे कि लोग उनके मजाकिया-हास्यपरक रोल को पसन्द करते थे। यहाँ तक कि सिर्फ उनके किरदार को देखने ही सिनेमाघर आते थे।

आइटम साँग का प्रचलन आज के दौर में अधिक बढ़ा है। इसमें भी बड़ा परिवर्तन यह है कि पहले हेलन जैसी अभिनेत्री थी, तो अभी कुछ वर्षों पूर्व मलाइका अरोड़ा, राखी सावंत, मल्लिका शेरावत जैसी अभिनेत्रियों को 'आइटम गर्ल' कहा गया। इनमें भी 'मलाइका' पर फिल्माए गए आइटम साँग बहुत प्रसिद्ध हुए। कई ऐसे प्रसिद्ध गाने हैं, जो मलाइका पर फिल्माए गये। जैसे–

फिल्म 'दिल से' - चल छैंया छैंया चल .....

फिल्म 'काँटे' - माही वे, ... इश्क कुछ ओर वे

फिल्म 'दबंग' - 'मुन्नी बदनाम हुई, डारलिंग तेरे लिए'। ये सभी गाने आइटम साँग के रूप में फिल्म में फिल्माए गए। इनका फिल्म की मूल कथा से कोई वास्ता नहीं था, लेकिन फिल्म के प्रमोशन में इनका भरपूर उपयोग हुआ। किन्तु, यहाँ ये बात स्पष्ट है कि 'मलाइका' को फिल्मी दुनिया में सिर्फ 'आइटम गर्ल' के रूप में ही जाना जाता है, चरित्र अभिनेत्री के रूप में नहीं।

अभी हाल के ही कुछ वर्षों में जो नया चलन आया, वह शीर्षस्थ अभिनेत्रियों से आइटम साँग करवाने का है। आइटम साँग के शब्दों और उसके अर्थ पर लोग ज्यादा ध्यान नहीं देते। उसका फिल्मांकन और नायिका का नृत्य अधिक महत्त्वपूर्ण है। दबंग-२ में करीना कपूर, जो हिन्दी सिनेमा में अपना अलग मुकाम बना चुकी हैं, ने आइटम साँग किया–'मेरी फोटो को सीने से यार, चिपका ले सैंया फेविकॉल से।' गाना प्रसिद्ध भी हुआ और दर्शकों को फिल्म तक खींचने का माध्यम भी बना। यह बेतुका गाना फ्लॉप नहीं हुआ, बल्कि इसे लोगों ने खूब पसंद किया। लोग अलग तरह की आवाज और धुन सुनकर मस्त थे, उन्हें अर्थ से ज्यादा मतलब नहीं रहा।[४]

माधुरी दीक्षित का फिल्मी सफर भी लम्बा रहा है। उनकी छवि एक अच्छी अभिनेत्री के साथ-साथ अच्छे डांसर की भी रही। माधुरी पर फिल्माया गया आइटम साँग 'मेरे प्यार का रस जरा चखना... ओ मखना, ऐसे तो चुरा न अखना... ओ मखना' बहुत हिट हुआ था। माधुरी ने विवाह-पश्चात् जब वापस रजत पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी, तब भी उन्हें आइटम साँग की जरूरत पड़ी। नये हीरो रणवीर कपूर के साथ उन्होंने 'टी.वी. पर ब्रेकिंग न्यूज, हाय मेरा घाघरा' आइटम साँग किया। इस गाने से माधुरी की उपस्थिति के साथ निर्देशक ने उनकी 'डांसिंग क्वीन' की इमेज को भी भुनाया। कैटरीना कैफ भारतीय मूल की नहीं हैं, लेकिन भारतीय सिनेमा में उन्होंने बड़ा मुकाम हासिल किया है। उनके चेहरे के नयेपन, बोलने की गैर हिन्दी स्टाइल तथा गोरी-पतली छरहरी काया को भारतीय दर्शकों ने बहुत पसंद किया। यह पसंद ही उन्हें आइटम साँग के लिए भी सफल धरातल उपलब्ध कराती है। फिल्म 'अग्निपथ' (नई– संजय दत्त और ऋत्विक रोशन अभिनीत) में कैटरीना का आइटम साँग 'चिकनी चमेली' ने सफलता के सभी शिखर छुए। इन्हीं पर फिल्माया 'शीला की जवानी' गाना भी बहुत बड़ा हिट था।

इसी तरह, बिपाशा का बाजार-मूल्य भी एक समय बहुत था। उसी समय उन पर फिल्माया गया– 'बीड़ी जलाई ले– जिगर से पिया' और 'जुबाँ पे लागा, लागा रे नमक इश्क का' बहुत बड़े हिट थे। इन गानों की शब्दावली या कहें भाषा में 'लोक भाषा' के शब्दों का प्रयोग किया गया तथा गायिकाएँ भी ऐसी ली गईं, जिनकी आवाज थोड़ी हटकर थी। जयप्रकाश चोकसे के अनुसार, फिल्म 'ओमकारा' के गाने 'बीड़ी जलाइले' ने बिपाशा को एक ऐसा आइटम नंबर दिया है, जिसे वे स्टेज शो में लम्बे समय तक भुना सकती हैं।[५]

इसी कड़ी में चित्रांगदा सिंह का नाम भी जोड़ा जा सकता है। बेहतर अभिनेत्री होते हुए भी आइटम साँग करने में वे गुरेज नहीं करतीं। फिल्म 'गब्बर' में उन्होंने 'कुंडी मत खड़काओ राजा, सीधे अंदर आओ राजा' द्विअर्थी आइटम साँग पर उत्तेजक नृत्य किया। नि:संदेह यह गीत दर्शकों को थियेटर तक लाने में सफल रहा। फिल्म की कहानी में गीत की आवश्यकता न होने पर भी कहानी को ऐसा मोड़ दिया जाता है कि गीत जोड़ा जा सके। फिर; सोशल मीडिया पर उस गीत को बार-बार दिखा कर उसे चर्चित बनाया जाता है, जिससे दर्शक थियेटर तक पहुँचें।

अभी हाल ही की बात करें, तो मलाइका अरोड़ा का स्थान नूरा फतेह अली ने ले लिया है। उनका सुन्दर चेहरा, कसा हुआ शरीर और बलखाती कमर दर्शकों को मोह लेती है। पिछली कुछ फिल्मों में लगातार वे 'आइटम गर्ल' की तरह नजर आ रही हैं। उनका सबसे पहला चर्चित गाना, मेरी दृष्टि में– 'साकी-साकी' था। इस गाने के साथ ही वे रातों-रात फिल्मी निर्देशकों की आइटम साँग के लिए पहली पसंद बन गईं। आज की फिल्मों पर नजर डालें, तो वे हर दूसरी-तीसरी फिल्म में आइटम साँग पर थिरकती नजर आती हैं। आइटम साँग के चलन से पूर्व एक दौर 'रीमिक्स' का आया। इस दौर में काफी पुराने गानों का 'रीमिक्स' बनाकर नये रूप में बाजार में उतारा गया। उम्मीद से अधिक सफलता मिली इन गानों को, जैसे– काँटा लगा, कलियों का चमन जब बनता है, थोड़ा रेशम लगता है आदि गानों ने बाजार में धूम मचा दी। 'काँटा लगा' फेम शेफाली जरीवाला रातों-रात स्टार बन गईं। उसके बाद तो जैसे रीमिक्स की झड़ी-सी लग गई। रीमिक्स का दौर थमा, तो आइटम साँग का चलन बढ़ा। आइटम साँग आज भी अपने चरम पर है। आज की फिल्मों पर नजर डालें, तो लगभग हर फिल्म में आइटम साँग देखा जा सकता है।

बढ़ती व्यावसायिक भूख, कम समय में अधिक लोकप्रियता, भीड़ को अधिक से अधिक अपनी ओर खींचने के लिए फिल्म के प्रमोशन में आइटम साँग की महती भूमिका है– इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। यह भी सही है कि आइटम साँग जितनी जल्दी जुबाँ पर चढ़ता है, उतनी ही जल्दी उतर भी जाता है। लेकिन आधुनिक जीवन-शैली, जिसमें डिस्को और डांस फ्लोर का चलन है, वहाँ इन गानों की महत्ता भी है। गोवा जैसे शहरों में हजारों डिस्को क्लब, डांस क्लब हैं, जहाँ देर रात तक 'नाईट पार्टी' चलती है। वहाँ ये गाने ही चलते हैं। अत: फिल्मों के ये गीत भले ही थोड़े समय के लिए लोगों की जुबाँ पर चढ़ें, फिल्मों की कमाई के ग्रॉफ को जरूर ऊपर उठा देते हैं।

सन्दर्भ-सूची

१. अजय ब्रह्मात्मज– सिनेमा : समकालीन सिनेमा, आइटम गीत का आकर्षण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २००६, पृष्ठ संख्या २०३
२. अजय ब्रह्मात्मज– सिनेमा : समकालीन सिनेमा, बँट रहे हैं प्रमाणपत्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २००६, पृष्ठ संख्या १७१
३. संजीव– सिनेमा के सौ साल, भारती फिल्म-उद्योग : फाल्के और फलक, बहुवचन, सम्पादक-अशोक मिश्र, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, अंक ३९, (अक्टूबर-दिसम्बर-२०१३) पृष्ठ संख्या २५२
४. ज्ञानेश उपाध्याय– सिनेमा के सौ साल, बदलता देश, दशक और फिल्मी नायक, बहुवचन, सम्पादक-अशोक मिश्र, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, अंक ३९, (अक्टूबर-दिसम्बर २०१३), पृष्ठ संख्या २३
५. जय प्रकाश चोकसे– सिनेमा : पर्दे के पीछे बिपाशा बसु : पिज्जा बंगालन, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, २०११, पृष्ठ संख्या १४५